ISSN: 2347-8705
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 5.8)
Journal Website www.literaryjournal.org

वर्त्तमान पीढ़ीक धरोहर : भाओ भगैत गह्बर गीत

अम्बिका कुमारी
शोधार्थी, **विश्वविद्यालय** मैथिली विभाग
बी. एन. मण्डल **विश्वविद्यालय** , लालू नगर, मधेपुरा

सृष्टिक विकास क्रममे आदि मानव द्वारा फल-फूलक खोज आ पशु-पक्षी सभक आखेट करबाक लेल जखन ठाम-ठाम यात्रा करैत छनि तऽ ओहि क्रममे एक अलौकिक शक्तिक प्रति आकर्षित भेला। ओ जंगल-झाड़ ओ नदी-घाटीक केर पृष्ठभूमिमे कतौ पाथर आ गाछ-वृक्षक नीचा माटीक पीढ़ी बनाकऽ पूजन-अर्चन करऽ लागल। ई भेल आदिम गह्बरक स्वरुप, जतऽ ओ व्यक्तिगत अथवा सामूहिक रुपमे उल्लासक घड़ीमे नचैत-गबैत ओहि अलौकिक शक्तिकक प्रति भक्ति-भावनासँ विनीत भऽ जाइत छलाह, तऽ तखनो आफत-आसमानीक स्थितिमे मुक्ति लेल प्रार्थनांरत होइत छलाह।[1] कालान्तरमे, आब्रजन एवं प्रवजनक क्रममे जाहि भूभागमे निवास कयलनि ओ अपन इष्ट-आराध्यकेँ संस्थापित कऽ हुनककर पूजन-अर्चन करऽ लगलाह।[2]

आर्यसभक प्रभुत्व विस्तार एवं ब्राह्मण वादी वर्ण व्यवस्था केर कारण समाज दू वर्गमे बाँटि गेल। प्रथम-आभिजात्य वर्ग आ दोसर-अनाभिजात्य वर्ग। प्रथम वर्गमे आर्य छलाह तऽ दोसर वर्गमे अनार्य, दास, शूद्र ओ वैश्य। कालान्तरमे वर्णनवादी कठोर अवांक्षित व्यवस्थाक प्रतिक्रियास्वरुप[3] अनभिजात्य वर्ग केर लोक सेहो अपन देवी-देवता सभक अन्वेषण कयलनि।[4] अपन पूर्व पराक्रमी पुरुष-नारीकेँ जातीय, ग्राम ओ जनपदीय स्तरपर थान आ गह्बर सभमे प्रतिष्ठापित कऽ पूजन-अर्चनमे लागि गेलाह। एहि तरहँ लोक मानसमे युद्ध, भय, आतंक, जय-पराजय एवं हर्ष विषादक परिस्थिति जन्य परिवेशमे देवी-देवता सभक प्रादुर्भाव भेल।[5]

वैदिक आर्य सभकेँ अपन वर्चस्व स्थापना लेल अनार्य लोकनिसँ पैघ लड़ाई लड़ऽ पड़लनि। कालान्तरमे सह-अस्तित्वकेँ भावनासँ आर्य लोकनि अनार्य लोकनिक देवी-देवता सभकेँ पूजोपास्नाक मान्यता देबऽ पड़लनि। एहि देवी-देवता सभकेँ लोक देवी-देवताक नाम अमिहित कयल गेल जकर पूजोपासना आ आनुष्ठानिक कार्य लोकाचारक अनुसार रुपँ होयब प्रारंभ भऽ अद्यतन अछि।

मिथिलामे एहि तरहक लोकदेवी-देवता सभक स्थानकेँ जनपदीय भाषामे थान, गह्बर ओ चौपड़ि कहल जाइत अछि। ओ सार्वजनिक रुपँ सफल होइत अछि, जाहिमे जातीय सर्वजातीय ओ जनपदीय लोक देवी-देवता सभक पीढ़ी-प्रतीक रुपमे अथवा लोक परिकल्पित आकार-साकार होइत अछि। एहि परिसरमे गाओल जाय वला स्तुतिपरक गीत सभकेँ "भाऊ-भगैत गह्बर गीत" अभिधान देल गेल अछि। लोकविधाविद् लोकनि एकरा धार्मिक गीत, पचरा गीत, आनुष्ठानिक गीत, धर्मगीत, धार्मिक विश्वासक गीत, पर्व गीत, देव पक्षीय गीत ओ धार्मिक गीतक संज्ञा देलनि अछि, मुदा सभक अभिप्राय धर्म केन्द्रित अछि, अर्थात् एकर अर्थ भेल-लोक देवी-देवता विषयक गीत।[6]

© Copyright @ Authors

लोकजीवनक विविध पक्षक वर्णन एहि भाऊ भगैत गहबर गीतमे भेटैत अछि किंवा लोककवि अपन एहि गीतमे विविध पक्षक वर्णन करैत आयल अछि। एहि गीतसभमे मानव-जीवनक अनेक कटु-मधुर झाँकीसभ चित्रित रहैत रहैत अछि। ई भाऊ भगैत गहबर गीत निछच्छ ग्रामीण-गमड़ क्षेत्रक तथाकथित अनपढ़, पिछड़ल ओ पछड़ल वृहत्तर समाजक गीत थिक जाहि अन्तर्गत मनुष्य अपन लगपासक दुनियाँ पूर्ण खिस्सा सुनैत-सुनबैत अछि, देखैत-देखबैत अछि। पानि जकाँ बहैत एहि साहित्यके सही अर्थमे लोक-साहित्य कहल जाइत अछि। लोकसाहित्यमे खिस्सा-पिहानी, इतिहास-पुराण, राग-द्वेष, ईर्ष्या-क्रोध, प्रेम-घृणा, नीति-धर्म, रीति-रेवाज आदि सभवस्तुक लेल पुरा-पुरा स्थान रहैत अछि। कखनो-कखनो तऽ लोक-साहित्यक एवकहि अंशमे काव्य, इतिहास, पुराण, नाटक आदि सभ एवकहि ठाम भेटि जाइत अछि। लोक-साहित्यक एहन महत्त्वपूर्ण अंगमे जाहिमे ई वस्तु सहजहि आबि जाइत अछि, लोकगीत सभसँ बेसी महत्वपूर्ण आ मनोरंजक अछि। काव्य, इतिहारा, विश्वारा, रागाज, विज्ञान, धर्म-नीति आदि ज्ञानक विविध धारासभक अध्ययनमे एहिसँ बेसी मदति भेटि सकैत अछि। समाजक रुपके जतेक अकृत्रिमताक संग लोकगीत समक्ष लबैत अछि ओतेक संभवतः कोनो दोसर प्रणाली नहि लऽ पबैत अछि। भाऊ भगैत गहबर गीत एहिमे तत्समाज मध्य बेसी तीव्र गतिये ई सभ जड़ि धऽ पबैत अछि आ अपन महत्ता दिग्दर्शित करैत लोकसंस्कृतिक झलकि देखाबैत अछि।[7]

भाऊ भगैत गहबर गीत एहिक पूजोपासनाक गर्भसँ जनमल गीत थिक। डॉ. रामदेव झा स्वीकारैत छथि जे प्राचीनतम अभिज्ञान स्रोत सभमेमैथिली लोकगीत प्रभेद सभक उल्लेख ओमैथिलीक शिष्ट साहित्यपर पड़ल ओकर सभक प्रभावक आधारपरमैथिली लोकगीतक ऐतिहासिकताक संकेत भेटि सकैत अछि। भाऊ भगैत गहबर गीत सतरहम शताब्दीक महामहोपाध्याय लोचन द्वारा राग तरंगिणीमे निर्दिष्ट अनिवद्धगीतक कोटिमे अबैत अछि, जाहि अन्तर्गत हुनका मते संगीतक शास्त्र सम्मत नियामक अनुपालन नहि होइत अछि। एहुसँ पहिले वर्णरत्नाकर जकरा चौदहम शताब्दीक आदि भागमे विरचित मानल जाइत अछिमे परिगणित लोकगीतक प्रभेद सभमे लोरिक आदिक चर्च मेल अछि, जे भाऊ भगैत गहबर गीतक सशक्त अंग मानल जाइत अछि। संभव अछि जे ...., डलोरि, चउपड़, चाञ्चलि, आदि सेहो एकर अंग हो।[8] गाथाहिक आधुनिक रुप गीत थिक आ इएह जखन प्रबुद्ध वर्ग द्वारा विकसित होइत अछि तऽ संगीत बनि जाइत अछि। विभिन्न लोकोत्सव अवसरपर ऋचा ओ सामगानसँ इतर विशेष प्रकारक लोकिक गान होइत छल जकरा गाथा, नाराशंसी, रेम्य इत्यादि कहल जाइत छल। एकरो सभक मान्यता वैदिक ऋचा ओ सामगाने जकाँ छल। कालान्तरमे भाषा बदलल, छंद बदलल, विषय-वस्तु बदलल, गान-पद्धति बदलल। किन्तु गानक प्रवृति, प्रयोजन ओ परिपाटी विद्यमान रहल।[9] भाऊ भगैत गहबर गीत एहि मध्यक गीत थिक जाहि अन्तर्गत गाथापरक गीत सेहो समाहित अछि। इतिहासमे ऋग्वेद अथवा ब्राह्मणयुगमे, वैदिक युगमे गाथापरक गीत गाओल जाइत रहल अछि। जाहि अन्तर्गत देव, राजा, वीर, पुरुष, स्त्री, इत्यादिक प्रशस्ति ओ कीर्तिगाथा वर्णित रहैत छल। इएह तथ्य भाऊ भगैत गहबर गीतक संज्ञाकेर पुष्ट करैत अछि।

एहि तरहे कतिपय उदाहरण भाऊ भगैत गहबर गीतक ऐतिहासिकता केर परिलक्षित करैत अछि यद्यपि एहि भौतिकता प्रधान वैज्ञानिक युगमे लोगक रुचि धर्म आ. तत्सम्बन्धी रीति-रेवाजं विश्वासमे

© Copyright @ Authors

ISSN: 2347-8705
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 5.8)
Journal Website www.literaryjournal.org

उत्तरोतर क्षरण होइत जा रहल अछि। तथापि भारतीय ग्राम्य खांसकऽ मिथिलामे आइयो ग्रामीण लोगक धर्म-निष्ठारक साक्ष्य भेटैत अछि। हुनक मिथिलाक ग्रामीण जनताक जीवन धर्मसँ ओत-प्रोत अछि जकर दर्शन भाऊ भगैत गहबर गीत आ कथा-गाथामे सर्वत्र पाओल जाइत अछि। चेचकसँ अपन बच्चाक प्राण-रक्षाक प्रश्न अभरैत अछि तऽ भीख रुपे गीत गबैत शीतला माताक आराधना होइत अछि तऽ कार्तिक पूर्णिमाक अवसरपर स्त्री-पुरुष गंगा, कमला, कोशी, स्नानकऽ तत्सम्बन्धी देवीक स्तुति करैत अछि। कार्तिकमासमे स्त्री समाज तुलसी पूजा करैत काल संध्या वंदन आ आरती गायन करैत अछि। महराइ आ भाऊ भगैत गहबर गीत गओलासँ कष्ट निवारणार्थ उपक्रम कयल जायबक भाव एहि गीत सभक प्रति धार्मिक आस्थाक व्यंजना थिक। एहि गीतमे परोपकार भाव, सामाजिक सौहाद्रता एंव आपसी विश्व-बंधुत्व आ मानव कल्याणक भावना सरलतासँ उपलब्ध रहेछ जे धार्मिकताक दिस इंगित करैत अछि।[10]

भाऊ भगैत गहबर गीतसँ सामाजिक ओ सांस्कृतिक जीवनक, समस्त चित्र प्रतिबिम्बित होइत अछि तें सामाजिक ओ सांस्कृतिक दृष्टिकोणसँ भाऊ भगैत गहबर गीत केर बड़ पैघ महत्व अछि। एहिमे जनजीवक सफल चित्र भेटैछ। भारतीय लोक कवि अपन एहि गीत सबमे समाजसँ सम्बन्धित विविध बात सभक अंकन करैत रहैत अछि। तै परिवार समाज, रहन-सहन, खान-पान, साज-श्रृंगार रीति-रेवाज, संस्कार, रुचि-अरुचि, राष्ट्रीय भावना, भक्ति-नीति, हास्य-व्यंग्य, लोक-विश्वास, व्यवसाय आदि सभहक वर्णन एहि गीतसभमे भेल अछि। भाओ भगैत गहबर गीत सामाजिक ओ सांस्कृतिक जीवनक अमूल्य उदाहरण थिक। लोक देवी-देवताक आवाह्नमे कयल जायवला आराधना कोनोड़ु गहबरमे सालमे एक बेर भाओक रुपमे सामूहिक रुपँ अवश्य कयल जाइत अछि। व्यक्तिगत पूजा सेहो लोग करैत अछि। एहि लेल कोनो दिन आ समय-सीमा नहि बान्हल अछि। पूजामे भगत दुखियाक दुःख दूर करबाक हेतु भाओ करैत अछि, देवताकेँ मनबैछ। सामान्यतः एकरा गोहारि कहल जाइछ। भगतकेँ पहिने नौतल जाइत अछि। तदनुसार नियत-तिथिकेँ भगत अपन भजन मंडलीक संग पूजा स्थलपर उपस्थित होइत हथि।[11]

डॉ. महेन्द्र नारायण राम 'भाओ'- भगैत गहबर गीत रुपमे एकर व्यवस्थित रुप देलनि 2010 ई.मे। पाँच सौ छिहत्तर गीत सभक संकलन ओ संपादन पचास पृष्ठक भूमिकाक संग ई पुस्तक डॉ. रामक साहित्य अकादमी, नई दिल्लीसँ प्रकाशित भेल, जे आमूल्य धराहरेक रुपमे चर्चित भेल अछि, डॉ. राम आलोच्य विद्या केर अंतर्गत प्रथम खंडमे सैद्धांतिक आलोचनात्मक विमर्श एवं द्वितीय खंडमे गहबर गीत पक्षीय खंडमे क्रमशः बंधन, सुमिरन, भाओ लगैत गहबर गीत लोकदेवता ओ गाथापरक गीत, नदी देवतापरक गीत पशु-पक्षी देवतापरक गीत एवं समगरदा गीत सभक प्रस्तुति बहुत क्रमबद्ध रुपसँ कयलनि अछि। परिणामस्वरुप आब ओ गहगर गीत सबमे विशेष अध्ययन-अनुशीलनार्थ आधारभूत साक्ष्यक रुपमे मान्य अछि।

डॉ. राम केर द्वारा ई कार्य साहसिक कार्य थिक। ओ जे ग्राम्य गहबरसँ छनि कऽ, उपछि कऽ अल्पज्ञात एवं अज्ञात लाठी, बौकी, हरिमैन, लूकेश्वरी, बघेसरी, कबूतरा माप, जालजा, गहिल, फूलमति, बामति आदि देवता सभमे समरैल बाबू, सोखा, राहु, गोरिल, फेकन राम, दयाराम, बालानंद, शशियादेव,

© Copyright @ Authors

ISSN: 2347-8705
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 5.8)
Journal Website www.literaryjournal.org

कोयलावीर, रानू सरदार, लालबेन बाबा, गरीबन मुइयाँ आदि सभक गीत खोजलनि, ओकरा गायनक अस्तित्वसँ गहबर सभक अन्वेषण जातीय एवं जनपदीय स्तरपर हेबाक आवश्यकता अछि। आन जातीय एवं गहबर (कुल देवी, ग्राम देवी-देवता) केर स्थलीय परिचिति श्रमसाध्य ओ व्ययसाध्य बनि जाइत अछि। एतबा अवश्य अछि जैं हुनक अस्तित्व जन आस्थामे बाँचल अछि, जातीय कुल परिवार एवं ग्राम्य स्तरमे ओ जीवनत बनल रहताह।

डॉ. राम डीहबर बाबाकेँ अश्वारोही कहलनि अछि, जे उज्जाड़ घोड़ापर सवार छथि–

उज्जरहि घोड़ा डीहवार असवार।

चली भेल बीज़ू बन शिकार!

फलत : वार्षिक पूजनक क्रममे हुनका हंसराज घोड़ा, जोड़ा जनेऊ ओ दूध चढाओल जाइत अछि–

“डीहवार स्थान केओ चढ़ावे हंसराज घोड़वा

केओ चढ़ावे जोर जनेऊ, ढारै दूध हे।..........

गहबर शोभ-हंसराज घोड़वा,

काने शोभे जोर जनेऊ

पीरिए शोभे दूध हे......।

काने शोभे सोना केर बलमा..........।”[12]

एहि तरहँ डॉ. राम लोक देवता ज्योति एवं कारिख केर जन्मस्थल ओ हुनकर गहबरकेँ जनकपुरसँ सटल परौली स्थान मानलनि अछि। परौलीकेँ जन्मडीह, सेहो कहल जाइत अछि। हिनक पराक्रमसँ पराभूत भऽ मीरा सुल्तान केर पीढ़ी सेहो पूजल जाइत अछि।

आ हय चलियैमे चलियै हय सखी सब

परौली दूहस्थान परौली दूहस्थान

आ हय सब सखी आब सजीयै हे आब दैया

अक्षत हय फूल पान।[13]

लोकदेवी गहिल मूलतः गौ जेहन दुधारन पशुक पोषिक, संवर्द्धिका आ आरोग्य दायिनी देवी हेवाक कारण पशुपालक सबमे बेसी प्रतिष्ठित छथि। लोकनायक बसाओल, बहतौर आ कारु जेहन लोक प्रसिद्ध आ भुइयाँ दवैं सब गहेलोपासकाक कऽ गोचर-सांस्कृतिक सूत्रपात कयलनि। एहि तरहँ जो आ अमीरक योगसँ समादृत शक्ति लोक स्तरपर गहिल संपूजित भेल। मिथिलाक अधिकांश श्रेयमे गहिल कुल देवी आ गुह्य देवीक रुपमे लोकपूजित छथि।[14]

आ ऽऽ हा ऽऽ

© Copyright @ Authors

ISSN: 2347-8705
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 5.8)
Journal Website www.literaryjournal.org

गै कोढ़ी गहिल देवी कुबजी जमान

छोट अन घर देखी जै मुँह बिधुआय

सुनु गहिल मैया

चारु चटाय फूल हलसति आबय

सुनु गहिल हे।[15]

जाहि तरहँ कारिख महाराजक गहबरमे मीरा-सुल्तान समादृत भेल तहिना धार्मिक रुद्रावक प्रभावमे गणिनाथ-गोविन्दक गहबरमे सेहो लालखाँ पूजल जाइत छथि।

वाक देवी बन्नी (बन्दी) पारिवारिक संस्कृतिक ओ धूरी अछि, जे कुलकँ सुख, सौभाग्य आ समृद्ध पालन करैत अछि। मूलतः ई वाक शक्ति मातृ रुपा छथि जे कल्याणमयी, आनंदमयी तथा शांतिमयी होइत अछि। वेदीपर प्रतिष्ठित बन्नीक पिण्डाकृति वस्तुतः ब्रह्मांडक सृजनशीलताक प्रतीक अछि, जाहिमे सृजनशक्ति निरंतर प्रवाहित अछि। बन्नी सोनाक खड़ाए पहिरने हाथमे सोनाक घड़ी लेने लोकक भावभूमिपर कुल परिवारक सुख समृद्धि बढ़ेवाक उद्देश्यसँ अवतरित होइत अछि। एकर जनम रविके तथा छठिहार शुकरकँ भेलनि (पैघमेलापर)। भगवती आँचरमे कौड़ी बान्हिकऽ कलवारक दुकानपर जा पहुँचलीह। भगवती मधुपान कवलीह। किछु खसा देलनि आ क नैक संग लऽ कऽ घुरलीह। ओ कखनो काली जकाँ रक्त स्नान करैत अछि, कखनो अमरपुर (दिव्य लोक)'क हाटमे विचरन करैत अछि तऽ कखनो बीजूवनमे मयुरक शिकार करैत अछि। कखनो अपन सेवक-भगैतके आहुति देवाक आदेश करैत अछि तऽ कखनो गहबरक चिन्ताजनक स्थिति देखिकऽ कुपित होइत छनि। कुपित बन्नीके चिन्तित देखिकऽ भगत हुनका आश्वस्त करैत अछि जे भगवतीक मंडप चन्दनक लकड़ीसँ छारि देल जायत। गोरैया वीरक एकांत निष्ठा बन्नीकँ समर्पित अछि। वाकदेवी बन्नीकँ कुलदेवीक रुपमे प्रतिष्ठा देल गेल अछि। हिनक भाओ भगैत-गहबर गीत गाबि-गाबि मिथिलावासी अपनाके हल्लुक करैत अछि।[16]

बन्नी ई गीत द्रष्टव्य–

बन्नी दाइ चलली गंगा असलनामा

आगाँ भऽ कऽ सेवक ठार हे।

अंगनामे कुईयाँ खुनाए देबइ गोसाउनि

अंगनेमे करब असलनाहे।

कुईयाँकैं पनियाँ निख्विद छै हे सेवक

जाय दियौ गंगा असलनाहे।

गंगा जाएब गंगाजल आनब

© Copyright @ Authors

ISSN: 2347-8705
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 5.8)
Journal Website www.literaryjournal.org

बन्नी दाइकेँ पाएर पखारब है।[17]

बौकी देवीक ई भाओ गीत द्रष्टव्य–

बौकी देवी गीत–

आ ऽ ऽ ऽ आ ऽ ऽ ऽ ऽ

गै छोटी मोटी कुइयाँमा बौकी पताल खिरै पनियाँ लहर मारै गै बौकी लहर मारै गै।

गै छोटी मोटी कुइँमामा बौकी पताल खिरै पनियाँ लहर मारै गै बौकी लहर मारै गै।

बौकी गै पनियाँ भरैत भेलै मिनसरबा आब कथी लय बनौलय गै

गै साँझ हे चललै बौकी पनियाँ भरैलय जमुनाकैं नदियाकैं तट

पर कुइमाँ पताल खिरै पनियाँ।

आब ओहीलय बौकी मारैय ओंगहरनियाँ ओही लय बौकी ठुनकैय

आब कथी से भरब से पनियाँ।

आब अंचड़ा फाड़ि-फाड़ि ऊगहन बनौलय

बौकी गै अंचड़ा फाड़ि-फाड़ि ऊगहन बनौलय

बौकी गै रसे रसे भरैय पनियाँ

पकबा इनारबापर गै।

साँझ हे पठौलय है बौकी तोरा पाँचो नाथ अघोरिया

हमरा ज़ल फल पनियाँ भरि लाबि दे गै।

कखनी पठोलियौ तोरा हमरा पाँचोनाथ भैया अघोरिया

आब कनैते-खीझैते लेलही बौकी बहिनियाँ पाँचोनाथ भइया

आब बेंट लेने मारैय छै सोटा आब।

आब सटका जे मारलकैकै जे बौकी

पटकि देल चिरैकि घैडलिया

छहोछीत भये गेलै पनियाँ

आब छीटका जे पड़ि गेलै, बौकी लहाय गेलै

भींगी गेलै चुनरी पटोर।

ओही लय बौकी रोदना पसारले

© Copyright @ Authors

आब करुनमा करै छइ हे।

बौकी करुनमा करै छइ हे!![18]

चमारक लोकदेवतामे लालबन बाबा केर गनती होइत छनि। लोक श्रुतिक अनुसार लालबन बाबा आ मनसाराम दुनू गोटे मित्र छलाह जे बाघक द्वारा मारल गेलाह। हिनकर पूजामे सस्त्र साड़ी गाँजा आदि चढ़ाओल जाइत अछि।[19]

हिनकर भाओ लगैत गहबर गीत सेहो होइत अछि, जनिक गायन श्रद्धापूर्वक होइत अछि। एकटा उदाहरण द्रष्टव्य-

किए तोरा आहो लाला जी, मुहमा मलिन भेल

किए मन लागैए उदास।

पान बिना आगे मैया, मुहमा मलिनभेल

गाँजा बिना लागैय उदास॥

गँजबा चढ़ौलऽ लाला जी पान मुँह धयल ऽ

चलि भेलऽ बिजु वन शिकार।

हरिणो ने मारैए लाला जी तितरो ने मारेए

बिछि-बिछि मारैए मजूर॥

हकन कानैए लाला जी वनकैं मजूरनी

वारी वयस हरलऽ सेनूर।[20]

बिहारक देव नदीमे कोशिका मिथिलाक लेल लेलिह्यमान जिह्वा वाली ओ करकपाल धारिणी महाकाली कहल गेल अछि। प्राचीनेकालसँ हिनका विपत्तिमूलक ओ विध्वंसकारिणी नदी मानल जाइत रहल अछि। एकरा पुण्यमती सुरसरिता सेहो कहल गेल अछि। लोकधारणाक अनुसार कोशिका हिमालयकै बेटी छी, किन्तु किछु गोटे हिनका देवन ऋषिक कन्या सेहो मानैत छथिन। भाओ भगैत गहबर गीतक अनुसार कोशिका अपूर्व सुन्दर छलीह। हुनक अप्रतीम सौन्दर्यपर कतेको बेर राक्षस, राय-रनपाल, रानू सरदार जेहन शूरवीर नायक मोहित भऽ गेल छलाह। मोतीराम, सलहेस, कालूवीर सन पात्रक निर्वाह सेहो दिनकर गीत मध्य भेल अछि। नेपालक तराइ आ बिहारक कोशी अंचलमे मान्यता छैक जे कोशी केर सात गोट धारा-सुन, दूध, तमर, भोट, लिखू, अरुण तथा तामा कोशी सभ बहिन सभ छथि परञ्च भोट प्रदेश (नेपाल-हिमालय प्रदेश)मे दूध कोशीये प्रमुख कोशी मानल जाइत अछि। भाओ भगैत गहबर गीतमे कोशी कखनो रानू सरदारकैं अपन पति मानैत छथि तऽ कतौ झिमला मल्लाह हुनक पति सावित होइत अछि। हिनकर पूजामे अक्षत, बतासा, लड्डू, पान धूमन, पाठी, कुत्ता, सुगरक बलिसँ कयल जाइत छनि।[21]

© Copyright @ Authors

ISSN: 2347-8705
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 5.8)
Journal Website www.literaryjournal.org

सिरो कोशिका सिन्दुरा शोभय, विन्दी विरानी।
आओर सिंगार देखू तिरहुत केर रानी॥
आजु अगम जल कोशिका कटिकैं भवानी।
नयनक कोशिका कजरा शोभय, सुरमा विरानी॥
आओर सिंगार देखू तिरहुत केर पानी।
नाकोमे नथिया शोभय, कुण्डल विरानी।
सिरबामे टिकुली शोभय, मिसीया विरानी॥
आओर सिंगार देखू मधुवन केर रानी॥
कानो कोशिका पासा शोभय, एरिण विरानी।
सोलहो शृंगार देखू तिरहुत केर रानी॥
पाएर कोशिका पाएल शोभय, छारा विरानी!
कमर कोशिका सड़िया शोभय, अंगिया विरानी।
सोलहो सिंगार देखू तिरहुत केर रानी॥[22]

ग्राम्य गहबर गीत सबभे भाओ गीतक विपुल प्राप्तिकैं देखैत गोहारि-गीत सभकैं स्वतंत्र गीत-विधाक रुपमे अध्ययन अनुशीलनक औचित्य बढ़ि जाइत अछि। एहि संदर्भमे डॉ. रामक अध्ययन अन्वेषणक आधार मानि कऽ विधिवत अध्ययन विस्तारक संभावना एवं औचित्य प्रबल भऽ जाइत अछि। कारण 'गोहारि गीत' समझ अपन धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक ओ धार्मिक महत्व के नकारल नहि जा सकैत अछि।

डॉ. राम भाओ-भगैत-गहबर गीत सभक वैशिष्ट्यकैं रेखांकित कयलनि अछि, जकरा संक्षेप रुपँ एहिठाम राखब समीचीन लगैत अछि-

1. गहबर गीतमे मिथिलाक जन-जीवक साक्षात्कार होइत अछि। एहिमे प्राकृतिक सौन्दर्य, सामाजिक जीवनक झाँकी, ऐतिहासिक व्यक्तित्वक उल्लेख ओ सम्बद्धता आ जनपदक हँसी-खुशी एवं दुःख दैन्यक प्रांजल-अभिव्यंजना भेल अछि।
2. गहबर गीतमे मिथिलाक पारिवारिक एवं सामाजिक जीवनक सुखद एवं त्रासदी मुक्त अभिव्यक्ति भेल अछि। देवी विषयक गहबर गीत सबभे नारी हृदयक श्रद्धा-भरव, भक्ति भाव देखना जाइछ।
3. मनुष्य जखन संकटापन्नमे रहैत छथि तऽ ओ अपन अराध्य देवी-देवताक भागाँ गहबर की जाकऽ गोहारि करैत अछि एवं निदानक आकांक्षा रखैत अछि।

© Copyright @ Authors

ISSN: 2347-8705
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 5.8)
Journal Website www.literaryjournal.org

4. गहबर गीतमे लयात्मक प्रवाहसँ वाध-वादन गेयता, लोकानरंजनक प्रवान्चिति देखबामे अबैछ।
5. गहबर गीत मिथिलाक सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवनक दर्पण बनि गेल अछि।
   a. एहि रुपँ भाओ-भगैत-गहबर गीत श्रुति संपादक साक्षात्कार अनिवार्य रुपँ करबैत अछि। डॉ. रामक आलोच्य पोथीमे विवेच्य भाओ-भगैत गहबर गीत सबभे धार्मिक महत्वकैं दिग्दर्शित करैत अछि। एहिमे सन्निहित समाजशास्त्रीय विवचेनमे क्षेत्रीयताक पुष्ट सुस्पष्ट अछि। एहि संदर्भमे डॉ. राम द्वारा संकलित ओ संपादित आलोच्य पुस्तक वर्तमान पीढ़ी लेल एक धरोहर अछि।

6. संदर्भ :–

i. खुटौनाकैं नीलकमल- संपादक-अश्विनी कुमार आलोक, शब्द प्रकाशन, दिल्ली, वर्ष-2016, पृ. 107
ii. वएह
iii. पंच लोकदेवता: डॉ. महेन्द्र नारायण राम, प्रकाशन, बिहार-हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना वर्ष 2003, अन्तर्भाव, पृ. 12
iv. वएह
v. वएह
vi. खुटौना के नीलकमल, पृ. 108 (भगैत)
vii. भाओ भगैत गहबर गीत: डॉ. महेन्द्र नारायण राम साहित्य अकादमी, 2010 ई० पृ. 34
viii. वएह पृ० 35
ix. मैथिली लोक-साहित्य: स्वरुप ओ सौंदर्य, कबिलपुर, दरभंगा
x. भाओ भगैत गहबर गीत- डॉ. महेन्द्र नारायण राम, पृ. 38
xi. वएह, पृ. 96
xii. वएह, पृ. 39
xiii. वएह
xiv. वएह, पृ. 173
xv. वएह, पृ. 44
xvi. वएह, पृ. 96
xvii. वएह, पृ. ४४
xviii. वएह, पृ. ९१

© Copyright @ Authors

ISSN: 2347-8705
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 5.8)
Journal Website www.literaryjournal.org

xix. वएह, पृ. ११०

xx. लोक जीवन ओ लोक साहित्य : डॉ. योगानंद झा,

xxi. वएह, पृ. १८८

xxii. भाओ भगैत गहबर गीत- डॉ. महेन्द्र नारायण राम, साहित्य अकादेमी, २०१०, पृ. ४८

xxiii. वएह, पृ. २४४

© Copyright @ Authors